Yuvadrishti

Volume III
Issue III

An offering at the lotus feet of our Divine Mother by the Yuvashakti

September
2002

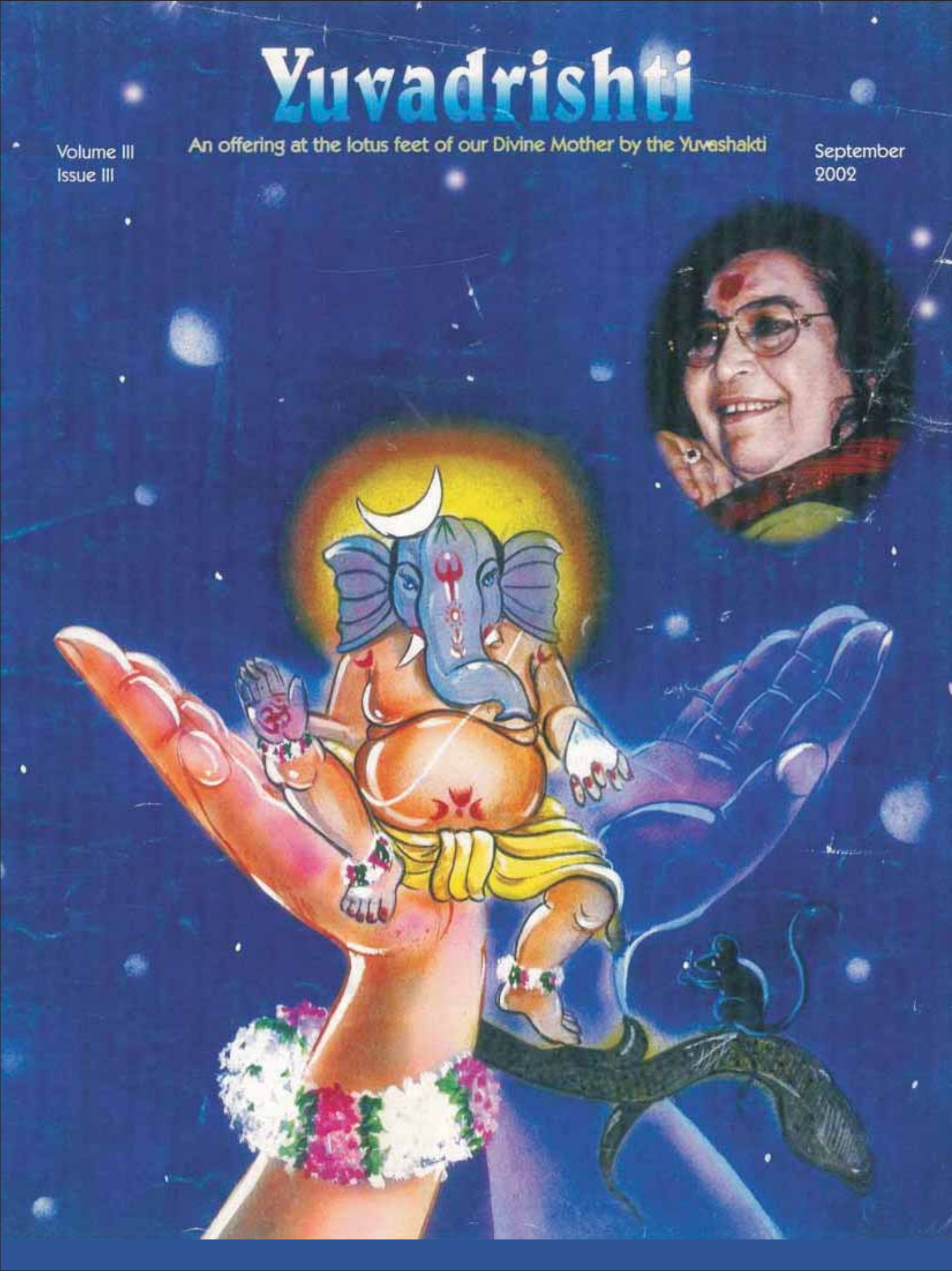

॥ जय श्री माताजी ॥

Contents

The Adishakti has come 4

कुण्डलिनी का ज्ञान तथा ऐतिहासिक स्रोत 6

Spiritual Secrets in the Carbon Atom 8

अमरनाथ 9

Sahaj Shiksha 11

परमपुज्य श्री माताजी निर्मला देवी संस्थान - निर्मल प्रेम 13

Yuvadrishti Asks 14

Snippets from the Kingdom of god 15

Knowledge and Fun..... 16

गुरु कृपा है अपरंपार

And when your guru is Adishakti Herself, She blesses a thousand fold to fulfill every desire of Her children. Yogis wished of a platform to integrate the yuvas, so She created 'Yuvadrishti'. What remained unsaid was that this very platform would be the medium of ascent for so many yuvas , either directly or indirectly.

It is Her kingdom and nothing in it lives more than its life. Therefore it is heartening to Celebrate the Second Year of Yuvadrishti, for the existence of even a speck of sand is a sign that it fulfills the purpose for which it was created.

So, come one come all , lets join this celebration. Lets celebrate this creation called 'Yuvadrishti'.

Cover design : Mangesh Wadake

गणेश पूजा

श्री गणेश के समान आप सब के चेहरों पर भी अत्यन्त सुन्दर चमक है। आपके छोटे, बड़े या वृद्ध होने से कोई फर्क नही पड़ता। श्री गणेश कि शक्ति हमारे अन्दर प्रवाहित होने से ही हमें सौंदर्य प्राप्त होता है। श्री गणेश, जो सभी देवताओं की शक्ति के स्रोत हैं, जब हमसे प्रसन्न होते हैं तो अन्य सभी देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं। उप कुलपति की भाँति वे हर चक्र पर विराजमान रहते हैं। उनकी इच्छा के बिना कुण्डलिनी का उत्थान नहीं हो सकता क्योंकि कुण्डलिनी श्री गणेश जी की आदि-कुमारी-गौरी माँ हैं।

श्री गणेश शाश्वत शिशु हैं। अहं तथा बन्धनों से वे परे हैं। हमें भी अपनी माँ के शाश्वत शिशु बनना है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए हमें अपनी कुण्डलिनी को उठाना है और सहस्त्रार में स्थिर करके अपने चित्त को अधिकाधिक समय वहाँ रखकर, बिना किसी प्रतिक्रिया के, ध्यानमग्न रहना है।

प्रतिक्रिया विहीनता का अभिप्राय केवल देखना मात्र है। बिना इसके विषय में सोचे जब आप देखते हैं तो सत्य, जो कि वास्तव में काव्य हैं, प्रकट होता है। यही कारण है कि एक कवि किसी साधारण व्यक्ति से अधिक देख पाता है। अन्तर्निहित सौन्दर्य आप के अवलोकन में भर जाता है और आप भी इसे देखने लगते हैं । आपने बच्चे तो देखे हैं। वे जिस भी जाति या देश से संबंधित हों प्रायः अति सुन्दर होते हैं। जापान में एक बार मैं एक मंदिर में गई। कुछ पश्चिमी महिलाओं ने यह कह कर कि ''जापानी बच्चे आपको डायन कहेंगे,'' मुझे वहाँ जाने से रोका। मैं जब वहाँ गई तो सभी बच्चे दौड़कर मुझसे चिपट गये, वे मुझे वहाँ से जाने ही नही दे रहे थे तथा मेरी साड़ी तथा हाथों को चूम रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि जो बच्चे मेरे तथा मेरी पुत्रियों के प्रति इतने मधुर थे वे उन महिलाओं को डायन कैसे कह सके। उन बच्चों की माताएँ भी हैरान थीं क्योंकि प्रायः वे विदेशी महिलाओं को ''डायन'' तथा पुरुषों को ''राक्षस'' कह कर बुलाते थे। तब मुझे एहसास हुआ कि उनके अन्दर गणेश तत्त्व पूर्णतः जागृत हो गया है। सभी पशुओं का, विशेषतः पक्षियों का, गणेश तत्त्व पूर्णतः अखण्ड होता है। पक्षी साइबेरिया से आस्ट्रेलिया तक की दूरी उड़ कर पार कर सकते हैं। दिशा ज्ञान श्री गणेश की देन है। श्री गणेश ही उनके अन्दर का चुम्बक हैं। हमारे अन्तः स्थित यह चुम्बक अबोध तथा निष्कपट व्यक्तियों को हमारी ओर आकर्षित करता है तथा राक्षस प्रवृत्ति के लोगों को हमसे दूर भगाता है। इस चुम्बक मे यह दोनों गुण निहित हैं यह कपटी लोगों को दूर भगाकर निष्कपट मनुष्यों को हमारी ओर आकर्षित करता है। यही कारण है कि अपने भरसक प्रयत्न के बावजूद हम कुछ लोगों को सहन नही कर सकते। श्री गणेश ही इसका कारण हैं।

पश्चिम में लोगों ने श्री गणेश तत्त्व को विकृत करने जैसा बहुत कुछ कीया। टी.वी. तथा यंत्र-तंत्रों में भी ऐसा ही दिखाया गया। छोटे-छोटे बच्चे गणेश तत्त्व की समस्याओं से पीड़ित है। दूषित वातावरण के कारण वे इन समस्याओं के शिकार हैं। सहजयोग में भी कुछ लोग पाखंडियों की तरह अड़ जाते हैं तथा उनका गणेश तत्त्व विकृत हो जाता है; परन्तु ऐसे लोगों का पक्ष लेने वाले व्यक्ति भी हैं। इस प्रकार की सहानुभूति, पाने वाले और देने वाले दोनो के लिए हानिकारक है क्योंकि पाने वाला अपनी समस्या से छुटकारा नही पा सकता तथा सहानुभूति देने वाला व्यक्ति भी उन्हीं समस्याओं में फँस जाता है। धरती माँ पर बैठ कर श्री गणेश अथर्वशीर्ष पढ़ो तथा श्री गणेश का ध्यान करो, आपकी समस्याओं का अंत स्वतः ही हो जाएगा। ऐसी समस्याओं से सहानुभूति का अर्थ है कि आप भी उन समस्याओं के

हिस्सेदार बन रहे हैं। किसी भी अनुचित वस्तु का साथ मत दो।

मूलाधार की समस्या से ग्रस्त सभी व्यक्ति जान लें कि ये समस्याएँ नर्क में जाने का पक्का साधन हैं, क्योंकि मूलाधार की समस्या के कारण ऐसे रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिन्हे चिकित्सक असाध्य रोग कहते हैं। मल्टीपल स्क्लेरॉसिस, माँस पेशियों की विकलांगता, आदी। एड्स मूलाधार की समस्या के सिवाए कुछ भी नही है। फिर भी स्वयं को मृत्योन्मुख एड्स के सिपाही बन कर यदि आप अपना बलिदान करना चाहे तो हम ऐसे मूर्खों के लिये क्या कर सकते हैं। बुद्धिहीनता भी मूलाधार की विकृति के कारण होती है, क्योंकि गणेशजी ही सुबुद्धि के दाता हैं। लोग विभिन्न प्रकार की अविश्वसनीय मूर्खताएँ करते हैं; जैसे हाल ही में भारत से बड़े आकार की चूड़ियाँ लाने को कहा तो मुझे बताया गया कि आजकल बड़ी चूड़ियाँ उपलब्ध नही हैं। बड़ी चूड़ियाँ अमेरिका चली जाती हैं, क्योंकि वहाँ के पुरूषों ने चूड़ियाँ पहनने का निर्णय किया है। मूलाधार ठीक न होने के कारण यह सब मूर्खताएँ होती हैं।

गहन रूप में यदि आप देखें तो श्री गणेश आदिशक्ति माँ के बच्चे हैं। आदिशक्ति माँ ओंकार से इनकी रचना करती हैं। ''ओंकार'' ही ''शब्द'' है। यह प्रथम शब्द है जब सदाशिव और आदिशक्ति सृष्टि की रचना हेतु अलग हुए। उस ध्वनी को ओंकार रूप में प्रयोग किया गया, ओंकार अर्थात प्रकाशपूर्ण चैतन्य लहरियाँ। उनके दाहिने भाग में सभी तत्त्वों के अणु हैं और बायें भाग में मनोभाव। इसके मध्य में आपके उत्थान की शक्ति निहित है। वे विनोदशील हैं। शिशु कभी अत्याचारी नही होते। श्री गणेश भी अत्याचारी नहीं है। परन्तु यदि माँ के विरूद्ध कोई कार्य किया जाए तो वे भड़क कर अपराधी को दण्ड देते हैं और इस तरह से दैवी न्याय मानव तक पहुँचता है।

निष्कपट बनने का प्रयत्न कीजिये। चातुर्य आपके लिये आवश्यक नही है। चातुर्य आपका मानसिक दृष्टिकोण है। तथा अबोधिता आपका अन्तःजात गुण है जो कि सर्वत्र व्याप्त शक्ति से सम्बद्ध है।

यदि हम श्री गणेश के प्रति समर्पण कर दें तो वे हमारी रक्षा करते हैं, तथा विवेक, उचित सूझबूझ तथा माँ की मर्यादा प्रदान करते हैं। आदिशक्ति माँ के अतिरिक्त वे किसी अन्य देवता को नहीं जानते, वे जानते हैं कि उनसे अधिक शक्तिशाली कोई भी देवता नहीं है। यही उनका विवेक है और प्रार्थना के समय आप भी इसे आत्मसात कर लें।

अपने हृदय में श्री गणेश से दया, करूणा तथा क्षमा की याचना करते हुए उनसे अपने अन्तर में प्रकट होने की प्रार्थना करते हुए विशेषतः उनकी पूजा कीजिए। अपने पूर्व पाखंडों, बन्धनों, दुश्विचारों तथा दोषपूर्ण जीवन को वायु विलीन हो जाने दें तथा अपनी अबोधिता की कोमल तथा सुन्दर चाँदनी को प्रकट कर अपने अन्तर से प्रवाहित होने दे। हम इन गुणों को उद्घाटित करें।

श्री गणेश शिशु होते हुए भी विवेक के दाता हैं। अतः हम कह सकते हैं कि विवेक मार्ग पर चलाएँ जाने पर बच्चे ही विवेक के दाता हैं। कितने विवेक से वे बातचीत करते हैं। उनमें से कुछ तो मुझे पूर्ण विश्वास में लेकर आप लोगों की गतिविधियों के बारें में बताते हैं। श्री गणेश ने आपकी रचना की, उन्हीं की कृपा से आप उत्पन्न हुए और माँ के गर्भ में उन्होनें ही आपकी रक्षा की। आपका पोषण तथा मस्तिष्क-विकास भी उन्होनें ही किया है। एक सरल ग्रामीण व्यक्ति अत्यन्त व्यवहारिक तथा विवेकशील होता है। बहुत से लोगों में यह भावना है कि हम अपनी अबोधिता खो चुके हैं। अबोधिता एक आंतरिक गुण है, जिसे हम कभी नही खोते। जिस प्रकार बादल पूरे आकाश को आच्छादित कर लेते हैं उसी प्रकार आपके अहम्, बन्धनों और त्रुटियों के बावजूद भी अबोधिता सदैव विद्यमान रहती है। आपको केवल इसका सम्मान करना होता है, तथा इसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए आचरण करना होता है। अबोधिता के गुण को लज्जाजनक न मानें। अबोधिता स्वयं ही विवेक प्रदान करने वाली एक शक्ति है, जिसके द्वारा सुगमता से आप अपनी समस्याएँ सुलझा सकते हैं।

देवी शक्ति से परिपूर्ण देश आस्ट्रिया में आज हम लोग हैं। कट्टरपन के आभाव के कारण यह देश अत्यंत अद्भुत है। अपनी सामान्य आँखों से ही देवी कृपा की वर्षा हम देख सकते हैं। वर्षा की स्थिति न होते हुए भी आज देवी कृपा हम देख सके।

निष्कपट बनने का प्रयत्न कीजिये। चातुर्य आपके लिये आवश्यक नही है। चातुर्य आपका मानसिक दृष्टिकोण है। तथा अबोधिता आपका अन्तःजात गुण है जो कि सर्वत्र व्याप्त शक्ति से सम्बद्ध है।

ईश्वर आपको धन्य करे।

The Adishakti .....has come

"When our Mother Earth was created, the Adi Shakti gave it a Kundalini, a reflection of Her own Adi Kundalini. Thus the various parts of the world are expressions of the chakras their qualities and deities. The Adi Shakti wanted to create a holy Mother Earth for humans to live on."

(Adi Shakti Puja 1997)

Then humans were created; and they were just like the other animals, without a knowledge of their creator, and without the free will to desire such a knowledge. We all know the story of Adam and Eve, set in the Garden of Eden and instructed by God, their creator, to help themselves to all the fruits, all except the fruit of the knowledge of good and evil. The Adi Shakti saw this and desired something different. She wanted that humans, these children of God, would evolve further than the other animals. She wanted that they would have this knowledge to discriminate between good and evil and to find out for themselves about the Spirit and the Divine. So the Adi Shakti came to the Garden of Eden as a serpent and persuaded Eve, who then persuaded Adam, to eat one of the forbidden fruits.

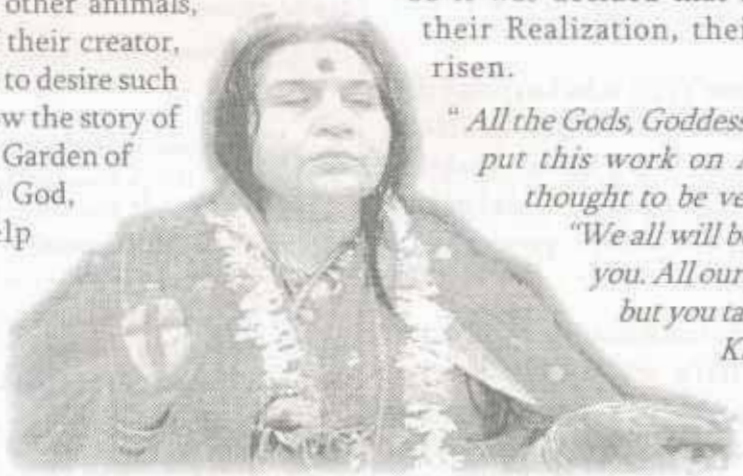

Contrary to popular religious belief, which says that the serpent was the devil, Shri Mataji has enlightened us that it was in fact the Adi Shakti, and that it was an auspicious event that led to the evolution of humanity. Within these first humans, was the coiled energy of the Kundalini, the reflection of the Adi Kundalini. They only needed to desire to know about this divine energy, their inner spirit, and the divine force that had created them.

As we know, humanity grew and spread all over the world. This knowledge of good and evil was in each and every person, but also the freedom that comes with free will. They became lost in the maya. The Divine incarnated on the Earth to save humans again and again, each time awakening another chakra and trying to lead people onto the path of dharma, to find the divine reflection in themselves. But each time, people did not see what was going on and were manipulated by negativity.

So it was decided that humans must be given their Realization, their Kundalinis must be risen.

"All the Gods, Goddesses, all of them decided to put this work on Adi Shakti whom they thought to be very capable. So they said "We all will be with you, entirely with you. All our powers will be with you, but you take up this job now in this Kali Yuga to transform human beings."

The Adi Shakti came to Earth. But it was seen that the humans were using the freedom they had been given to destroy themselves.

"So the Divine Collectivity thought, 'Are we going to completely ruin the creation of Adi Shakti? Are we going to completely destroy what She has created and then recreate something better?' This was the discussion going on and most of them were so fed up with the human beings, specially with the western freedom, that they said, "These people want hell and why should we give them the heavens? It's not proper."

However, the Adi Shakti was a Mother and She wanted to save Her children. So She created in them a desire to seek. Some of these seekers were deceived by the negativity that set out to distract them as cults and false gurus. Other people had become too deeply entrenched in their freedom, lost in their egos. They followed blindly in the wake of the destruction, humans themselves had created.

The Adi Shakti is here on this Earth now to save those that are seeking. She has taken it upon Herself to give Self Realization to those that desire it.

"So the seeking is ardent and they are seeking really the Truth, they will find it, they will find it, no doubt, because whole creation is for them. All angels are for them. They are looking out for them."

Not everyone is aware that at this very time we are blessed by the presence of the Adi Shakti here on Earth, in physical form.

"I have not developed two horns to show something great about Myself, so they won't be impressed. But on the other side, if you see, this is maya, this is Mahamaya, where the Adi Shakti, you see, does everything like human beings do. You won't be able to find out that She is divine."

So it is up to the Sahaja Yogis now to spread the word, to open people's eyes to the Truth and let them know that the Adi Shakti is here. The Adi Shakti is with each of us as a reflection of Her Kundalini and we are also surrounded by Her power, the Paramchaitanya.

"...this power of Paramchaitanya is in every particle, into every atom and it acts in such a manner that it directs, it pushes you, it takes you to the path of benevolence.... This power of Adi Shakti, which we call Paramchaitanya, is the power that loves you, has complete control of the nature. It understands. It thinks. It knows everything. Everything about you, it knows. It works on every angle, in every walk of your life. It is with you entirely."

So we must always keep in mind that we are at every moment bathed in the divine love of the Adi Shakti. It is because of Her desire that we have free will and so we might enjoy the depth of the spiritual reality. *- Radha Partridge, USA*

Excerpts from Adi Shakti Puja, Cabella 1994

"The drop becomes the ocean, and the drop has to become the ocean by dissolving all its dropness with other drops, and all the drops dropping their drops become the ocean ultimately."

- H. H. Shri Mataji Nirmala Devi

The following extract from a national daily, quoting Dr. A.P.J. Abdul Kalam formerly The Principal Advisor to the Govt. of India and now the President of Republic of India has once again showed the amazing prowess of Sahaja Yoga in the field of Medical Research.

Sahaja Yoga effective in controlling epilepsy,says Abdul kalam

Indian Express

FRIDAY, DECEMBER 17, 1999

BY OUR SCIENCE REPORTER

Hyderabad, Dec 16: Sahaja yoga in combination with traditional anti-epileptic drugs has been found to control epilepsy successfully, according to eminent defence scientist *Dr APJ Abdul Kalam.*

Delivering a lecture in absentia, on "Indigenous Technology: The Impact on the Health Care in the Next Millennium" at the first joint annual conference of the Indian Epilepsy Association and Indian Epilepsy Society here, Dr Kalam said, "The Defence Institute of Physiology and Allied Sciences (DIPAS) has successfully demonstrated that application of Sahaja yoga along with the conventional anti-epileptic drugs could control epilepsy".

Practice of yoga for six months with reduced allopathic drugs, reduced the frequency, intensity and duration of epileptic Seizures (fits), he added.

"Yogic practice led to the tranquility of brain as indicated by alpha activity of EEG, reduced sympathetic activity and stress response. Blood lactic acid level was also reduced due to better aerobic capacity" he said adding yoga with specific drugs results in amelioration of the symptoms of epilepsy.

Dr. Kalam, who is the principal scientific adviser to the Central Government, however sounded a note of caution saying long-term use of anti-epileptic drugs might lead to disturbances in cerebral functions.

So it would be better to stabilize the drug level at minimum effective dose, he added. Experimental studies conducted by DIPAS along with the All India Medical Sciences revealed that the under –nourished young children were more prone to epilepsy. Scientists should explore methods for prevention and effective treatment with least side effects for control of epilepsy.

The day does not seem very far when the beautiful manifestation of our Mother's love, SAHAJA YOGA, will be recognized by one and all as a holistic solution to all miseries of mankind.

Jai Shri Mataji.

कुण्डलिनी का ज्ञान तथा ऐतिहासिक स्रोत

कुण्डलिनी शब्द संस्कृत के कुण्डल शब्द से उत्पन्न है, अर्थात जो कुण्डल में है। कुण्डलिनी शक्ति रीढ की हड्डी के नीचे त्रिकोणाकार अस्थि (Sacrum) में ३ $^{1}/_{2}$ कुण्डलों मे सुप्तावस्था में स्थित होती है। त्रिकोणाकर अस्थि के Latin नाम 'Os Sacrum' का अर्थ 'शरीर का पवित्रतम हिस्सा' है। प्राचीन ग्रीक (युनानी) इस बात को जानते थे, और क्योंकि शरीर के दहन में नष्ट होनेवाला यह अन्तिम भाग है, इसे 'Hieron Osteon' नाम दिया। साथ ही, वे इसे अलौकिक शक्तियों का श्रेय भी देते थे।

इजिप्ट (मिस्र) के निवासी भी इसे (त्रिकोणाकार अस्थि को) बहुमूल्य और विशेष शक्तियों का पीठ मानते थे।

पश्चिम में त्रिकोणाकार अस्थि को सांकेतिक रूप से कुंभ तथा Holy Grail (जीवन के जल का पात्र) के रूप में दर्शाया गया है। कुण्डलिनी हमारे जीवन-वृक्ष का पोषण करती है। वह सर्प की भाँति कुण्डल बनकर स्थित होने के कारण 'Serpant Power' भी कहलाती है। कुण्डलिनी का वर्णन उपनिषदों में मिलता है। योग के समस्त प्रकारों में कुण्डलिनी योग को सर्वोत्तम माना गया है। गुरू वशिष्ठ ने इस बात पर बल दिया की कुण्डलिनी हमारे भीतर पूर्ण ज्ञान (Absolute Knowledge) का पीठ है। परम् शक्ति कुण्डलिनी के मानव देह में स्थित होने की अनुभूति एवं ज्ञान को ऋषी-मुनी सर्वोच्च ज्ञान मानते थे। वैदिक एवं तांत्रिक मूलग्रंथो में कुण्डलिनी एवं चक्रों का विवरणात्मक वर्णन मिलता है।

परम् पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ने कुण्डलिनी के वर्णन में श्री आदिशंकराचार्यजी को उद्धृत किया है। श्री आदिशंकराचार्य, जो ईसा के बाद के सातवी शताब्दी में थे, ने कुण्डलिनी जागरण के विषय में कुछ इस तरह से लिखा है : कुल-कुण्ड (मूलाधार का खोखला स्थान) मे ३ $^{1}/_{2}$ कुण्डल में सुप्तावस्था से जागृत हो कर जब वह सर्प की तरह उठते हुए चमकीली क्षेत्र से गुज़रती है, तब श्री चरणों से बहते हुए अमृत से नाड़ियों के द्वार खुल जाते हैं, और अन्तर में अमृत भर जाता है।

संत ज्ञानेश्वर (ईसवी सन् १२७५) ने अपनी अत्यन्त प्रसिद्ध पुस्तक ज्ञानेश्वरी के छठे अध्याय में कुण्डलिनी का वर्णन किया। उन्होनें लिखा, ''कुण्डलिनी महानतम शक्तियों में से एक हैं। इसके जागरण से साधक का संपूर्ण शरीर कांतिमय हो जाता है और इसके कारण देह की अवांछित अशुद्धियां निकल जाती है। साधक का शरीर अनुरूप लगने लगता है, और उसकी आँखों में चमक आ जाती है।''

संत कबीर (ईसवी सन् १३९८ के आसपास) ने अपने काव्य में कुण्डलिनी के विषय में लिखा। गुरु नानक देवजी (जन्म सन १४९६) नें कुण्डलिनी के विषय में बताया और लिखा कि पवित्र हृदय एक स्वर्ण पात्र है जिसमें ''दशम् द्वार'' तथा इड़ा एवं पिंगला नाड़ियों से अमृत भरता है। दशम् द्वार अर्थात ब्रह्मरंध्र (सहस्रार चक्र)।

''परमात्मा ने मानव शरीर को छःह चक्रों के साथ घर की तरह बनाया और उसमें आत्मा का प्रकाश स्थित किया। माया के महासागर को पार कर उस परब्रह्म परमात्मा, जो ना आता है, ना जाता है, जो ना जन्म लेता है और ना ही मरता है; से मिलो। जब तुम्हारे छःह चक्र एक रेखा में मिल जाएँगे, तो सुरति (कुण्डलीनी) तुम्हें नश्वरता से परे ले जाएगी'' - श्री गुरू ग्रंथ साहिब। गौरतलब है कि सातवा चक्र इस समय तक खुला नही था।

पवित्र कुरान में पैगम्बर मोहम्मद साहब नें 'कियामा' के दिन की बात कही। उन्होनें कहा तब 'हाथ बोलने लगेंगे'। ''उस दिन उनका मुँह बंद भी होगा तो भी उनके हाथ हमसे बात करेंगे, और उनके हाथ उनके कर्मों के साक्षी होंगे''। जब कुण्डलिनी का जागरण होता है, तब शीतल चैतन्य लहरीयों के रूप में शक्ति का बहाव हाथों में महसूस होता है। साथ ही, चक्रों की स्थिति का ज्ञान हथेली व उंगलियों पर होता है।

ईसाईयों ने इसे पवित्र आत्मा (Holy Ghost) का प्रतिबिम्ब कहा और Pentecost Reunion के समय हुए इसके प्रकटीकरण को पूजा। Pentecost Reunion पर ईसा मसीह के शिष्यों के सिरों के ऊपर ज्वाला की लपटों के रूप में इसका प्रकटीकरण हुआ था। मूसा नें इसे जलती हुई झाड़ी में देखा।

परम् पूज्य श्री माताजी नें अपने एक प्रवचन में बताया कि यह परमात्मा के स्त्री-रूप (आदिशक्ति या पवित्र आत्मा) की शक्ति है जो हमारे सृजन के समय से हममें स्थित है।

ईसा नें टॉमस के धार्मिक सिद्धांत (Gnostic Gospel of Thomas) में, और अन्यत्र

स्पष्ट रूप से कहा, "पवित्र आत्मा (आदिशक्ति) मेरी माँ है"। "परमात्मा का साम्राज्य अन्दर ही है।"

ताओं में 'ते चिंग' (आदिशक्ति) माँ के रूप में वर्णित है। लाओ -त्से ने कुण्डलिनी का वर्णन उस घाटी की आत्मा के रूप मे किया, जिसमें सुषुम्ना नाड़ी प्रवाहित है और उसे अनश्वर बताया। हमारा अन्दरूनी आध्यात्मिक यंत्र, जो हमें ब्रह्म से जोड़ता है, संसार के सूक्ष्म दर्शन (Microcosm) से वर्णित किया जा सकता है।

बौद्ध गुरूओं नें मानव में स्थित मोक्ष के मार्ग के अस्तित्व को सबसे बड़ा रहस्य माना। उन्होनें इस ज्ञान को केवल कुछ योग्य शिष्यों तक ही सीमित रखा। विभिन्न संस्कृतियों मे, विभिन्न स्वरूपों में कुण्डलिनी के चिन्ह देखे जा सकते है; जैसे कि बुध का सर्प (mercury's serpent) जो मानसिक रूपान्तरण की क्रिया का रासायनिक चिन्ह है।

परम् पूज्य श्री माताजी के अनुसार, कुण्डलिनी को दैवी शक्ति भी कहा जाता है। जब भ्रूण (Foetus) केवल २-२$^{1}/_{2}$ माह का होता है तब यह शक्ति उसमें प्रवेश करती है। ब्रह्म चैतन्य की किरणों का स्तंभ भ्रूण के अल्पवर्धित मस्तिष्क से गुज़रता है, और चार भिन्न प्रकार की नाड़ियों में प्रत्यावर्तीत (Refract) हो जाता है। ये चार नाड़ियाँ है पॅरासिंपथेटिक नाड़ी तंत्र, दाहिना सिंपथेटिक नाड़ी तंत्र, बाँया नाड़ी तंत्र, और केन्द्रीय नाड़ी तंत्र। भ्रूण के तालू भाग पर गिरने वाली ब्रह्म की किरणें तालू के मध्य को भेदते हुए सीधे Medulla ablongata और फिर सुषुम्ना से गुज़रती है। Medulla ablongata से गुज़रते हुए यह दैवी शक्ति उसमें एक धागे के समान रेखा छोड़ती है और मेरूदंड के नीचे त्रिकोणाकार अस्थि (Sacrum) या मुलाधार में ३$^{1}/_{2}$ कुण्डलों में स्थित होती है। यहाँ यह दैवी शक्ति कुण्डलिनी कहलाती है। तालू भाग (ब्रह्मरंध्र) से प्रवेश करने के बाद यह दैवी शक्ति चक्रों से होते हुए गुज़रती है। फलस्वरूप, चक्र दैवी शक्ती से पोषण प्राप्त कर जागृत हो जाते है। इस प्रकार जागृत चक्र उतकों (Tissues) की ठीक तरह से भिन्नता और वृद्धि के लिये उत्तरदायी होते है। इन उतकों का विकास कार्यानुरूप विभिन्न अंगों (Organs) और तंत्रो (Systems) में होता है। निश्चित ही ऐसा अद्भुत और आश्चर्यजनक कार्य दैवी शक्ति से ही संभव है।

जब बच्चे का जन्म होता है, और नाल को काट दिया जाता है, तो सुषुम्ना नाड़ी में एक दर्रा (gap) आ जाता है। यह खाली जगह Solar plexus और Vagus nerve के बीच देखी जा सकती है। इस रिक्त स्थान को ज़ेन तथा भारतीय दर्शनशास्त्रों मे क्रमशः रिक्त (Void) तथा भवसागर कहते हैं। बाद में अहंकार और प्रति-अहंकार विकसित होकर गुब्बारों की तरह फूल जाते हैं, तथा तालू भाग सख्त (Calcify) हो जाता है और बच्चे का सर्वव्यापक परमात्मा की दिव्य शक्ति से संबंध टूट जाता है। तब मनुष्य अपना अलग अस्तित्व समझने लगता है, और मैं (अहं) का भाव उसकी चेतना में आ जाता है।

बच्चे के जन्म के बाद जब ब्रह्म की शक्ति से उसका संबंध टूट जाता है, तो मूलाधार में स्थित कुण्डलिनी प्रसुप्त (Dormant) हो जाती है। कुण्डलिनी के ३$^{1}/_{2}$ कुण्डल सर्प की तरह होने के कारण प्राचीन पुस्तकों, जैसे घेरंद्र संहिता में इसे भुजंग-रूपिणी वर्णित किया गया। मानव की कुण्डलिनी में रस्सी की तरह, शक्ती के कई धागे होते है। कुण्डलिनी के ३$^{1}/_{2}$ कुण्डल इस शक्ति के एक-साथ मोड़ने से बनते है। परम् पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी के अनुसार इन धागों की संख्या 21^{100} है। जब कुण्डलिनी जागृत होती है, इनमें से केवल २ या ३ धागे जागृत होकर ब्रह्मरंध्र का भेदन करते हैं। इन्हे सबसे अंदरूनी नाडी (ब्रह्म नाड़ी) से गुज़रना होता है। इनका चलन-वलन पूर्णतः चक्राकार (Spiral) होता है।

प्राचीन युनानी और बाद में रोमन पौराणिक कथाओं मे आरोग्य के देवता का उल्लेख मिलता है। उनके हाथ में एक दण्ड दर्शाया जाता है, जिसपर एक या दो सर्प लिपटे है : Caduceus। इसे यूनानियों ने आरोग्य का चिन्ह क्यों माना? दण्ड मानव शरीर के आधार (रीढ की हड्डी) का प्रतीक है। दण्ड पर लिपटे एक या दो सर्प कुण्डलिनी के प्रतीक हैं; क्योंकि वह मध्य नाड़ी से दुहरे चक्रधार सर्पिल तरह से (Spiral double helical movement) जागृत होती है। कुण्डलिनी का चलन और DNA अणु की द्विसर्पिल (Double Helix) बनावट में समानता विस्मयकारी है।

कुण्डलिनी हमारी देखरेख और पोषण करने के आलावा हमें एक उच्च और गहन व्यक्तित्व भी प्रदान करती है। कुण्डलिनी की शक्ति किसी व्यक्ति को पूर्णतः पवित्र, शुद्ध, आत्म सम्मान तथा पवित्र प्रेम से युक्त, अनासक्त, दूसरों का ध्यान रखने वाली और शुभ बनाकर प्रकाशित चित्त व आनंद तथा शांति प्रदान करती है। सहजयोग एक विधि है, जिससे हर इच्छुक व्यक्ति को कुण्डलिनी जगृति का अनुभव मिलता है।

जब हम कुण्डलिनी जागृति की महत्ता समझते हैं, तो क्या हमें यह प्रश्न नही पूछना चाहिये, कि श्री माताजी निर्मला देवी जिनकी उपस्थिती में कुण्डलिनी इतनी सहजता से जागृत होती है, कौन हैं?

(Translated from 'A Seeker's Journey'- Greg Turek)

Spiritual Secrets in the Carbon Atom

"....This innocence protected all the creation of the world and penetrated into all that is matter...Human beings were created in a different manner and carbon was placed to create the amino acids."

The Atom is described as a Charge Cloud model / Quantum Mechanical model / Orbital model. The model is based on the idea of Heisenberg's uncertainty principle, which says that the precise location or the velocity of any given electron in an atom is not known. The model uses indistinct and overlapping "probability clouds" to approximate the position of an electron. In the case of the Carbon atom the electrons occupy four tear - drop shaped clouds in a tetrahedron like arrangement. These clouds represent the areas in which the electrons spend most of their time. They move so rapidly in this zone that they form a cloud rather than a specific flight path. Within these clouds there exist a specific zones that the electrons favor. These zones form a spiral around the surface of each of the tear drop shaped clouds. The electron's high probability zone formed spiral standing waves around the carbon atom's nucleus.

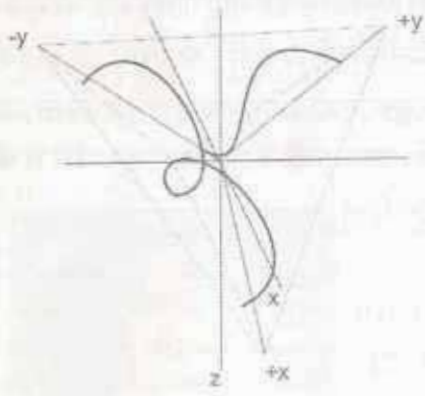

In the first view of this configuration of the carbon atom , as shown in the figure, 3-dimensional *Aumkara* (ॐ) could be seen. From a different angle that Omkara became a flat 2-dimensional *Swastika* (卐). The Swastika was a 2-dimensional representation of the 3-dimensional Aumkara. Rotating the model to another angle shows the symbols of the Greek Mythology: Alpha (α) and Omega (Ω). Further, from another angle we can also observe the 'Holy Cross' (✞). The Carbon atom by containing within it, these universal symbols, demonstrates that matter is a manifestation of the same Divine consciousness.

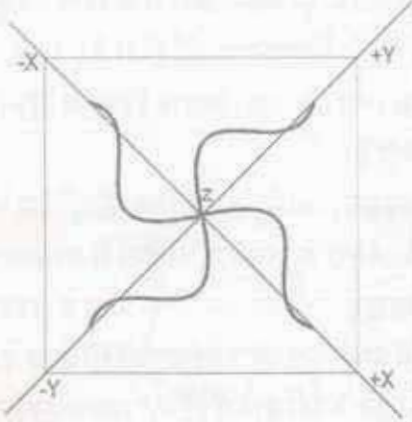

It is a well known fact that the carbon atom is the base (mool) for all existence. The Mooladhar Chakra (Pelvic Plexus) being the base, is ascribed to the Earth element, which is represented by Carbon. Shri Mataji says"...Now in the Science I have read that they have discovered an energy, that they call 'Quantum Energy'. 'Quantum', I don't know why they call it quantum, because Quantum is four. So it might be meaning the energy of Ganesha,..." The construction of the Mooladhar as explained has four petals (sub-plexuses), which is same as the valency of the carbon atom. When the carbon atom is viewed from a particular angle, it replicates the structure of the Mooladhar chakra, i.e. The arrangement of the four clouds in the carbon is same as that of the four petals of the Mooladhar chakra which is presided over by Shri Ganesha.

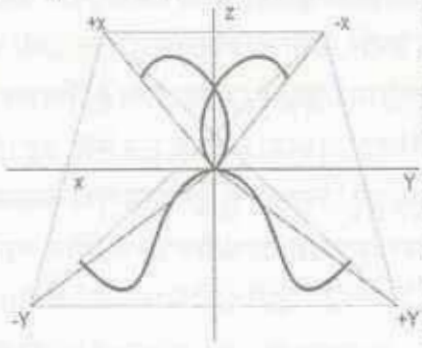

Magnet has a high proportion of carbon.

Continued on pg.10.....

पारंपरिक तौर पर, तीर्थयात्रा पर जाना साधना के लिये उपयुक्त माना जाता है। रास्ता जितना कठिनाईयों से भरा होगा, अंतिम परिणाम उतना ही अच्छा होने की संभावना प्रबल होती है। यात्रा का एक उपयुक्त समय होता है, जब काल में बंधे हुए (मनुष्य) और कालातीत मिलते है; जब हम स्वतः के, तथा परम के विषय मे अपनी समझ बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। अमरनाथ की पवित्र गुफा के लिये वार्षिक तीर्थयात्रा का मर्म यही है।

अमरनाथ की यात्रा का सर्वोच्च विंदु श्रावण माह की पूर्णिमा के समय होता है। बारहवी शताब्दी में रचित रज तरंगिणी तथा अबुल फज़ल लिखित आईन-ए-अकबरी के अनुसार, सदियों से साधु संत व तीर्थ यात्री अमरनाथ यात्रा पर जाते रहे। इस वर्ष भी पूर्णतः बर्फ से बने और हिमालय की गहराइयों में स्थित इस शिव-लिंग के दर्शनार्थ एक लक्ष से अधिक तीर्थयात्री अमरनाथ गए।

यही वह स्थान है जहाँ अर्ध-सुप्त श्री पर्वतीजी को श्री शिव ने ब्रह्मांड के निर्माण तथा हनन का रहस्य बताया था। अंडो में भ्रूण रूप में उपस्थित कबूतरों के एक जोड़े ने अनजाने में ही यह रहस्य सुन लिये। कथा कुछ इस तरह है, कि सदियों पहले माँ पार्वती ने श्री शिवजी से उनके मुंड-माला पहनने का कारण पूछा। श्री शिवजी नें माँ पार्वती को बताया कि वे जब भी जन्म लेती हैं तो वे माला में एक नया मुंड जोड़ देते हैं। इस बारे में और जानने की माँ की लगातार विनति के बाद उन्होनें माँ को अजर-अमर रहस्य बताने का निश्चय किया। इसके लिये उन्हें एक एकांत स्थान की जरूरत हुई, जहाँ कोई जीवित प्राणी उसे सुन ना सके। उन्होनें अमरनाथ की गुफा को चुना। इसकी तैयारी में उन्होनें सर्वप्रथम नंदी को पहलगाम (बैल गाँव) में छोड़ा। चंदनवाडी में उन्होनें अपनी जटाओं से चन्द्रमा को छोड़ा (जटाओं)। शेषनाग झील के किनारे अपने सारे नागों को छोड़ा। महागुणास पर्वत (महागणेश पर्वत) पर उन्होनें अपने पुत्र (गणेश) को छोड़ने का निर्णय किया। पंजतरणी पर उन्होंनें पाँचो तत्व जिनसे जीवित प्राणी उत्पंन्न होते हैं (पृथ्वी, आकाश, जल, वायु तथा अग्नि) को छोड़ा। श्री शिवजी इन तत्त्वों के स्वामी माने जाते हैं। माना जाता है, कि इसके बाद सांसारिक दुनिया के त्याग के सांकेतिक, श्री शिव-पर्वती नें तांडव नृत्य किया। कोई जीवित प्राणी अमर कथा ना सुन सके, यह सुनिश्चित करने के लिये श्री शिवजी नें कालाग्नि नामक रूद्र का सृजन किया। किसी भी जीवित प्राणी को निकालने के लिये उसे गुफा के अंदर और चारों ओर अग्नि फैलाने के लिये कहा। तत्पश्चात् श्री शिवजी नें माँ पार्वती को वह अनश्वर रहस्य बताया। संयोगवश श्री शिव-पार्वती कें मृग-आसन में कबूतर के दो अंडे सुरक्षित रहे। प्रथम तो अंडे होने के कारण वे निर्जीव माने गये और द्वितीय, वे शिव-पार्वती आसन के आश्रय में बच गयें। अमर कथा को सुन चुके इन अंडो से जो कबूतर जन्में, अजर-अमर (अनश्वर) हो गये। अमरनाथ पर इनके दर्शन होना अत्यन्त शुभ माना जाता है।

१३००० फुट की ऊँचाई पर स्थित यह शिव तीर्थ एक गुफा में है। इसमें स्थित शिव-लिंग पूर्णतः बर्फ (हिम) से बना है, जो चन्द्रमा की अवस्था के अनुरूप घटता और बढ़ता रहता है। माना जाता है कि श्रावण माह की पूर्णिमा को इसकी स्थिती आदर्श होती है। यह भी माना जाता है कि इसी स्थान पर श्री शिवजी ने देवों को अमरता का वरदान दिया था; अतः यह नाम अमरनाथ पड़ा।

एक वृत्तांत के अनुसार, बालकोट गाँव के बुटा मालिक नामक एक गुज्जर मुसलमान गड़रिये नें इस तीर्थ को कुछ शताब्दियों पहले फिर से खोज निकाला। तीर्थ स्थल पर अर्पित चढ़ावे का तीसरा भाग अब भी उसके परिवार को मिलता है।

वर्तमान कश्मीर घाटी नीलमाता पुराण के अनुसार, सतिदेश नाम की विशाल झील हुआ करती थी। ये झील उँचे पहाड़ों से घिरी हुई थी। पानी के नीचे अमर हो जाने वाले जलोद्भव नामक

राक्षस के संहार के लिये काश्यप ऋषि ने त्रिदेवों के आशिर्वाद से पहाड़ काट कर इस झील को बहाकर खाली कर दिया। इससे जो भूमि प्रकट हुई वह धीरे-धीरे बसने लगी और काश्यप ऋषी के नाम से काश्मीर (कश्मीर) कहलाई। अपूर्व सौंदर्य तथा पूर्ण एकांत वाले कई स्थानों पर ऋषि-मुनियों तथा देवताओं ने आश्रम बनाए। सर्व प्रथम अमरनाथ की पवित्र गुफा के दर्शन भृगु मुनि नें किये, जो उन दिनों हिमालय की यात्रा पर थे।

प्राचीन ग्रंथ 'बृंगेश सँहिता' में भी इस तीर्थ का महत्त्व मिलता है। ग्रंथ के अनुसार, बृंगेश ऋषी को श्री शिवजी ने सुरक्षा के लिये एक दंड (छड़ी) प्रदान की। तदनुसार, प्रति वर्ष अमरनाथ यात्रा का आरंभ श्रीनगर के दशनामी अखाड़े से छड़ी मुबारक (पवित्र त्रिशूल) के जुलूस के साथ होता है।

.....Continued from pg. 8

Shri Mataji says "*Shri Ganesha within us is magnetic. So a person who has Shri Ganesha awakened within himself becomes magnetic.... So many birds fly out all the way Australia to Siberia because they have the magnet with them, they have that innocence with them. There are so many fishes which have an actual magnet placed in them.*"

The Alpha, the Omega and the 'Holy Cross' are traditionally ascribed to Christ. And Shri Ganesha presides over the Aumkara and the Swastika. Christ is the incarnation of Ganesha. Both demonstrate the value of childlike innocence and simple wisdom. Christ, son of god, often asked his disciples to "be as little children". Both are divine children; both are conceived immaculately; both are divine sons of a holy trinity (Christ is the son of Yahweh and the holy spirit/mother Mary and Ganesha, son of lord Shiva and mother Parvati).

So, we see how the divine in its spectacular creation has enveloped great spiritual secrets in something as minute as the Carbon atom.

"*Matter is innately Spiritual*".

(Extracts from *Sahasrara Puja 2001 - Shri Ganesh Puja 1986; -Knowledge of Reality Magazine, Australia)*

With Best Wishes

P. K. Taluja
P H R CONSULTANTS
170, Anand Vihar, Pitam Pura, Delhi 34
www.phrconsultants.com

FUCOT
Anti-Rust Treatment, Acrylic Paint Cealent
Anti Ageing Car Care Product
Phone : 011-6161227, 6712689

SUN Systems
(Distributor / Stockist)
Deals in Computer Hardware and Peripherals
111N/31, Ambedkar Marg, Opp. Hirab Nagar,
Ghaziabad (UP) Phone : 4757073

Wishing for More Young Eyes to Open
Chandigarh Yuvashakti

MANISH ELECTRONICS
Sakchi, Jamshedpur (Jharkhand)

Tushar K. Thorave
Bibwewadi, Pune

Daulal Nandalal
Kunjlal Street, Upper Bazar, Ranchi

Devpujari Family
Noida

Kay Jee Industries
E-24/25, Sector 7, NOIDA
Exporters of Men's Shoes

Best Wishes
UK Collectivity

"One day, I am sure, you all will evolve to such a State that even your glance is sufficient to make trees grow, to make the fruits sweet, to make the flowers fragrant."

Sahaja Shiksha

(*Education*)

Sahaja Shiksha as the term implies focuses on a pattern of education to children especially ranging from Primary classes to high school.

The journey began with introduction of Sahaja yoga in a Dehradun school. Sahaja Yogis approached the Principal of a reputed School in Dehradun in Garhwal Himalayas. The Principal asked the yogis there to conduct a program for V-VIII class students in that school in the Moral Science period. That was the beginning. Divine wisdom was blessed by Shri Mataji to launch this unique system of introducing Sahaja yoga.

This program was different, in a sense that it was not a 'one day introduction and a follow up'. It was devised in a way that children are gradually told about Sahaja Yoga over a period of few weeks or even months.

Sahaja Yoga was initially introduced to the children without conducting a conventional meditation program, so that they do not confuse it to be like other forms of so called, yoga.

In the beginning, sentiments and psychology of the level of class standard is studied by the Yogi/Yogini to start the subject.

For higher classes, science can be an excellent tool for the concept. While in lower classes, folklore or short stories from epic or comics or myth serve as an excellent attention-drawing subject.

This so called course started with the discussion of evolution, which formed the basics of explanation of nature, elements, human body and the energy that is the driving force behind. The energy that prevailed much before the universe was cited with the help of explanations on potential and kinetic energy. The explanation, started with how the kinetic energy (Adishakti) started Her journey of creations, and gradually shifted to the constellation, galaxy and the solar system with family of nine planets created by this kinetic energy. Interesting scientific discoveries and theories, like the big bang, were told to suit the scientific bent of students.

To introduce the students to Shri Mataji, Sahaja Yoga and Kundalini, an explanation on following lines was given.

The Earth was chosen as the place for culmination of the evolution of the living process from formation of Amino acid to Amoeba to the Homo Sapiens. As a part of creation the kinetic energy can be felt omnipresent everywhere on Earth. The same as a part of reflection prevails in all living processes, while in human being it resides in the base of the spinal column in three and a half turn coiled form called as Kundalini. It is derived from the name *Kundal* (meaning coil) in Sanskrit. The reflection of the potential energy resides in a very secret niche of our heart, which makes the heart function and pump the blood. There are seven other energy centers which control the actions and reactions of an human being to the environment he faces in his day-to-day life from emotions to intelligence to seeking the truth through knowledge, sharing and love. Many religions were born but they all spoke the same thing in different ways. No one in the past could lead the human being to awaken this potential Kundalini energy into its kinetics again and get connected to the main source. It was in the year 1970 that a great spiritual scientist, a doctor who knew the human body very well and a compassionate Mother, Shri Mataji Nirmala Devi devised and discovered a unique method to awaken this energy, en-masse, in human beings.

Then Self-realization was given to the children and they were asked to check their vibrations.

Later, children were told stories such as of 'Puppet Pinocchio' and his quest to become a living human. The desire of the puppet Pinocchio gets fulfilled as he meets a Fairy that helps him recognize the potential energy within him and guides him to know the truth and values of life. This allegory was used to introduce Shri Mataji who with Her compassion reveals and

guides us to recognize the hidden energy 'Kundalini' within us. They were told that this awakening would help them grow and enlighten themselves. They were told how we all are like this 'Pinocchio' whose growth has gone stunted, as puppet never grows. In order to grow we have to know the truth by knowing our Kundalini Mother, who nourishes, sooths us and looks after all our well-being. The subtle system, chakras and their qualities and their presiding deities were introduced to the children with the help of stories from mythologies, serials, epics, comics and children fairy tales.

Following classes were invariably started with recapitulation and experiencing the self-realization. Then the theory for the day, at the end once again children were asked to pray and express gratitude to Mother by saying, "Thank You Shri Mataji for what we have received today".

Short stories on Kabira, Adi Gurus incarnations and other realized saints formed a good material for education; even stories from Panchatantra served the purpose.

The first two- three classes were devoted to basics of energy, nature or stories related to elements or the tattwa. Next class was on quiz test, based on questions taught in first three classes. The quiz result was incentive oriented while the whole section was gifted with little incentive. Next two- three classes were on Sahaja Practical, where one was told about the vibratory awareness on fingers but nothing on cleansing or catches or mantras or deities. On discretion we urged the student to come with his/her parents to Sahaja Center for further knowledge. Thus Sahaja Shiksha continues to enlighten children.

Aum Twameva Shakshat Shri Nirmal Vidya Shakshat Shri Adi Shakti Mataji Shri Nirmala Devvai Namoh Namaha.

-Rabi Ghosh
ghosh_rabi@hotmail.com

Time Line

In the beginning of March 1923, Shri Mataji's parents went for hunting as Her mother desired to see an uncaged tiger in its natural environment. When they were sitting on a machan (a platform built on a tree top), they saw a huge tigress approaching them. She asked him not to shoot as that tigress was pregnant, and that made her feel motherly and therefore she did not want the tigress to be killed. Shri Mataji's father then said that she might deliver Shri Durga, the Goddess who rides on a tiger.

Birth of Shri Mataji took place in the month of March 1923. Smt. Cornelia (Shri Matajis mother) delivered a very radiant, fair looking female child. The child had a spotless complexion and a head full of thick, black hair. She had very bright shiny eyes and a very sweet smile. She was born in the middle of the day, on 21st March, that is the day on which the sun completes its travel from the equator to the Tropic of Cancer and heralds the beginning of bright sunshine, particularly in India. It is also the day when day and night are equally divided. The child was born in Chindwara, which is located on the longitude of the Tropic of Cancer. Incidentally the holy city of Mecca is also situated on the Tropic of Cancer.

"My Memoirs" – Baba Mama

परमपुज्य श्री माताजी निर्मला देवी संस्थान - निर्मल प्रेम

निर्मल प्रेम

परमपुज्य श्री माताजी निर्मला देवी संस्थान (ग्रेटर नोएडा)

परमपुज्य श्री माताजी निर्मला देवी संस्थान परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा स्थापित किया गया, गैर सरकारी धर्मार्थ संस्था (NGO) है जो निम्न- लिखित धर्मार्थ कार्यों के प्रति समर्पित है।

१. समाज के दुर्बल वर्ग जैसे अनाश्रित महिलाएँ, यतीम बच्चे-विशेष रूप से बालिकाओं का पुनर्स्थापन और,

२. सहजयोग तकनीक से रोगी तथा ज़रूरतमंद लोगों को बिना शुल्क पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करना जिसमें मनोदैहिक (Psychosomatic) रोगों का इलाज भी सम्मिलित है।

अनाश्रित महिलाओं का पुर्नस्थापन

लक्ष्य : माँ के रूप मे महिलाएँ मानव का सृजन और रक्षा करने में प्राकृतिक रूप से समर्थ है। फिर भी महिलाओं के कुछ वर्ग अभी तक अत्यन्त दुर्बल है। उनसे भेद भाव किया जाता है और उनका शोषण किया जाता है। इस संस्था का लक्ष्य ऐसी असहाय, अनाश्रित एवं त्यक्त सदस्याओं को अस्थाई रूप से आश्रय एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करके आर्थिक एवं अध्यात्मिक उन्नति प्राप्त करने के लिए पुनर्स्थापित करना है।

परियोजना

उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में 'निर्मल प्रेम' नामक गृह का निर्माण किया जा रहा है जिसमे सौ अनाश्रित महिलाओं और यतीम बच्चों को अस्थाई रूप से आश्रय प्रदान किया जाएगा। उन्हे यहीं पर जीवन की मूल आवश्यकताएँ और सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँगी और उसके साथ आवश्यक व्यावसायिक प्रशिक्षण भी उन्हे दिया जाएगा ताकि वे आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन सकें। यह गैर सरकारी धर्मार्थ संस्था इन प्रशिक्षिकाओं को उपयुक्त रोज़गार दिलाने में भी मदद करेगा।

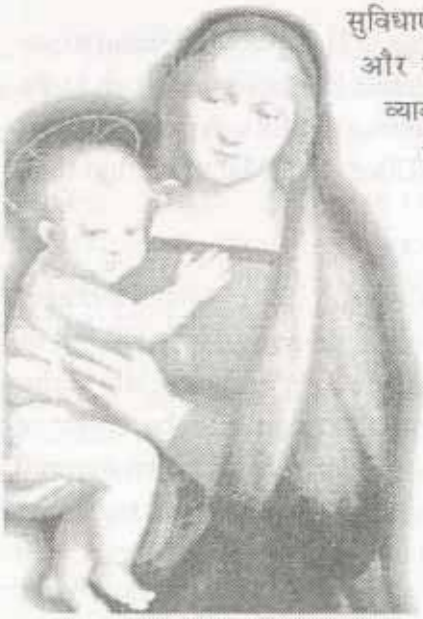

निर्मल प्रेम मे रहने वाले इन लोगों को आध्यात्मिक पथ प्रदर्शन प्रदान किया जाएगा ताकि परिवर्तित होकर वे आन्तरिक शान्ति एवं सन्तुलन की अवस्था को प्राप्त करें और निर्मल प्रेम से बाहर जाने के पश्चात् भी जीवन का बेहतर ढंग से सामना करने की सामर्थ्य उनमे आ सके और वे उपयुक्त रोजगार भी पा सकें।

स्वास्थ्य एवं शोध केंद्र

लक्ष्य

स्वास्थ्य एवं शोध केन्द्र रोगियों को सहजयोग की तकनीक के उपयोग द्वारा पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करने के लिए बनाया जाएगा। ये कार्य योग्य चिकित्सकों तथा विशेषज्ञों के पथ प्रदर्शन में होगा।

परियोजना

सहजयोग मानवता को श्री माताजी द्वारा दिया गया अनुपम उपहार है। बिना किसी भेदभाव के सभी को इसके लाभ उपलब्ध हैं। मानव निहित दिव्य शक्ति, जिसे धर्म ग्रन्थो मे कुण्डलिनी कहा गया है, को जागृत करने का एक अद्वितीय तरीका सहजयोग है। सहजयोग के अभ्यास से यह शक्ति व्यक्ति के सभी असन्तुलनों और विकारों का स्वतः उपचार करती है, चाहे ये शारीरिक हो या मानसिक। विश्व भर मे विशेष रूप से भारत, रूस और यूरोप मे वैज्ञानिक शोध ने सहजयोग ध्यान धारणा के चिकित्सिय लाभों को स्थापित किया है। यह तथ्य स्थापित हो चुका है कि सहजयोग के अभ्यास से कैन्सर, अस्थमा, मिर्गी, माइग्रेन, मानसिक रोग, उच्च रक्तचाप, गठिया रोगों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

केन्द्र पर आने वाले रोगियों का सहजयोग तकनीकों द्वारा निःशुल्क इलाज किया जाएगा। जो लोग इलाज के लिए केंद्र मे रहेंगे केवल उन्ही से उनके रहने और खाने आदि के लिए नाम मात्र का धन लिया जाएगा।

निर्मल प्रेम के भवन का निर्माण उत्तर प्रदेश मे ग्रेटर नोएडा स्थित संस्थानिक क्षेत्र के प्लाट पर हो रहा है।

हमारा अनुरोध है कि इस उत्तम कार्य के लिए उदारतापूर्वक दान करें। आपके द्वारा दी गई राशि पर आयकर नियम की धारा ८० (जी) के अन्तर्गत कर छूट है।

दानराशि के चेक, ड्राफ्ट "H. H. Shri Mataji Nirmala Devi Foundation" के नाम से बनने चाहिए, जो दिल्ली मे देय हों.

आपकी मंगल कामना करते हुए।

वी. जे. नलगिरकर (सचिव),

परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी संस्थान,

सी - १७, कुतुब इंस्टीटयूशनल संस्थान, नई दिल्ली - ११००१६

Yuvadrishti Asks.....

What is the significance of Sahaja Yoga in your life ?

Everything!

-The most common answer

Sahajayoga makes the life and world worth living just as a pure smile brightens up a sad face.

-Jyothi Bhardwaj

Sahaja yoga is a spiritual light, to lighten other's life, which is also in my life. This is heart's true desire.

- Kiran S. Pawar

Sahaja yoga is a feeling of satisfaction, forgiveness, innocence, love and creativity.

- Pradnya D. Sapte.

Evolution! Sahaja yoga gives you a higher life irrespective of your social status, occupation, skills, or any other physical attributes. If you follow the simple ways, you always find yourself higher than from where you were.

-Vivek Joshi

Sahaja Yoga is a core instrument for perfection of life, so it is the ultimate aim to become master at it.

- Pramod Dhurpate

Sahaja yoga is Oxygen for me. It is an integral part of my life.

- Amod Nikam

By practicing this yoga we become our own guru and it guides us to become a well balanced personality where we see the solutions to all problems ,feel peace in the heart and most importantly we become one with the divine.

- Subhrajit Barua

It is to my life what water and sunlight are to a seedling.

- Aditya Pugalia

My life without SahajaYoga will be like a flower without fragrance.

- Rajesh Sharma

It has given me a joyous big Sahaja family and gave me the sense of purpose of my life. Now the road is clearly visible.

- Dinesh Chawla

सहज योग एक ऐसी स्थिति है, जिसके लिये अनेक संतों ने प्रयत्न किये, परन्तु श्री माताजी की कृपा से हमें सहज में ही प्राप्त हो गई। इसलिये मेरे जीवन में यह अत्यंत महत्वपुर्ण है।

– हेमांगी नागीनहाल

श्री माताजी की कृपा से मै अंतःस्थित परमात्मा को पहचान सका।

– रोहन मोरे

हम हैं सहज से, सहज है हमारा, वनु सहजी अगर जन्मु दोबारा

– सौरभ जैन

सहजयोग असावा सहज, नाही कोणते ओझे,
जसे संथ पाण्यावरील जहाज,
सहजयोग असावा सहज, हृदयातून निघावा,
सहज , सहज सर्व जनलोक ईश्वराशी जोडले जावे,
सहज सहज हित्त शुध्द इच्छा हृदयाशी बाळगून,
असा हा निर्मल योग.

-संदीप वाळूंज

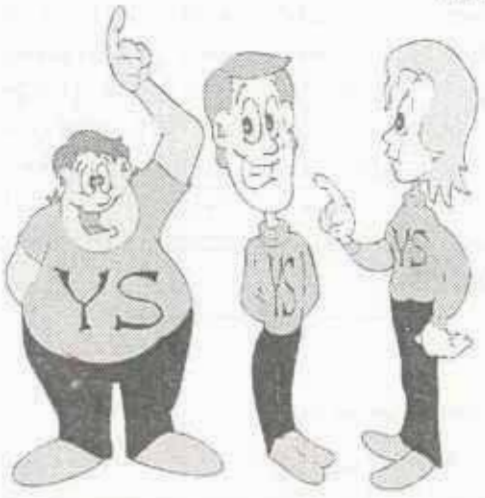

SNIPPETS FROM THE KINGDOM OF GOD

News from Youth in the UK

The UK Yuva Sahajis have been visiting popular public outdoor spots such as Speakers Corner (Hyde Park), leafletting and asking people if they would like to try Sahaja Yoga. They simply start singing bhajans - sometimes with Instruments such as Harmonium, drum, spoons - and try to keep their attention on seekers and Shri Mataji. This works pretty well.

More at *http://www.geocities.com/yuvadrishti/ uknews.html*

Yuva Shakti Seminars: NOIDA & HYDERABAD

A Yuva Shakti seminar was organized by Noida Yuva Shakti on 2nd June, 2002 and also there was another one in Hyderabad.

Topics of the seminar were be:

- Spreading of Sahaja Yoga. Sharing of ideas & practical suggestions.
- How to grow deeper in Sahaja.
- Interactive session on experiences.
- Presentation of Sahaja Yoga & Yuva Shakti activities and their future plan of actions.
- Importance of Sahaja Marriages.

Please visit *http://www.geocities.com/yuvadrishti/yuvasem.html* for full coverage.

Shri Kubera Puja, Canajoharie, August 2002

Top notch dance, drama and music without any renowned-professionals performing! The Washington DC and California Music groups made the night a night-to-remember with an adaptation of SimpleJi's Bhajan: "Zaraa Canajoharie aake dekho, Aadishakti maa Nirmal milenge"
Full report: *http://www.geocities.com/yuvadrishti/ShriKuber.html*

Children's Seminar, Canajoharie, August 2002

The Children's camp was held at the "land" with two sessions of Dandiya (Stick Dance), one workshop of Kathak dancing, Farm trip, Ride in the country on a tractor and movie.

Full report: *http://www.geocities.com/yuvadrishti/children.html*

Shri Mataji's Manhattan Public Programme, August 2002

Sahajis told me that it was a huge surprise that Shri Mataji stayed on after the programme on the stage and worked on people individually, so that seekers who couldn't feel the vibrations earlier could feel it. She patiently worked on individuals for 3-4 minutes each! People came in hoards, grabbed the flyers and barged in: Unstoppable crowds overran gate volunteers.

Full Report: *http://www.geocities.com/yuvadrishti/pp.html*

Yuva Shakti Seminar, 15-18th Aug. 2002 Switzerland

This was the first European seminar exclusively for Yuva Shakti Orientation, held at Switzerland. The attention was on the following topics:

- Environment of Sahaja Yogis i.e. how to deal with the pressure from friends and family?
- Spreading Sahaja Yoga: How? Why? Where?
- Inner growth.
- The role of Yuva Shakti within the Sahaja Yoga collectivity.
- European theme (for Internet, pamphlet...) to attract young seeker.

Full report: *http://www.geocities.com/yuvadrishti/euro.html*

Answers to Knowledge and Fun

1. Omkar 2. Saraswati 3. Bhagirath 4. Instrumental 5. Nand 6. Peacock 7. Bull 8. Sheep 9. Crane 10. Koyal 11. Horse 12. Elephant

As we know music is an integral part of Sahaja Yoga, so let us know the Genesis of Music while solving this puzzle Re-arrange the letters to solve the puzzle.

KRMAO ☐☐☐☐☐ is the first holy sound created.

TWASAIRAS The Goddess of Music is ☐☐☐☐☐☐☐☐

HAIRBAGSHT ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ were the knowledgeable ancients who brought Sangeet Ganga to Earth.

TAILMURENTNS Music is a composite idea of Vocal, ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ & Dance

DANA ☐☐☐☐ is the combination of 'Nakar' meaning Air and 'Dakar' meaning fire or energy.

Rishis and Munis had learnt original Swaras from birds and beasts in nature.

KCEAPOC ☐☐☐☐☐☐☐ - Sa

LUBL ☐☐☐☐ - Re

PEHSE ☐☐☐☐☐ - Ga

NERAC ☐☐☐☐☐ - Ma

LOYAK ☐☐☐☐☐ - Pa

RESHO ☐☐☐☐☐ - Dha

PHELATEN ☐☐☐☐☐☐☐☐ - Ni

Answers on Page 15.

Sir C.P. Srivastava 's Message to the youth

.....As we all know future is of Youth. In this modern era by all functionaries of society that is Politicians, media, mafia, fashion baron and so on, now it is up to the Youth to take up the mission of transformation of society. This transformation has to come from inside which is the message of Shri Mataji and also mine. If Youth doesn't take up this mission of spreading the message of Sahaja Yoga then future is very bleak. All Youth should take up this job of transformation which is given to us by Shri Mataji.

Sahaja Yogi Youth is different from normal people because their inner power is enlightened. They are guided by divine power and hence they are always on the right path. Other people will be impressed by such Youth.....

-Sir C.P.Srivastava
18-11-2000
Pratisthan

"लालबहादुर शास्त्री" राजनेति में सत्य का एक जीवन

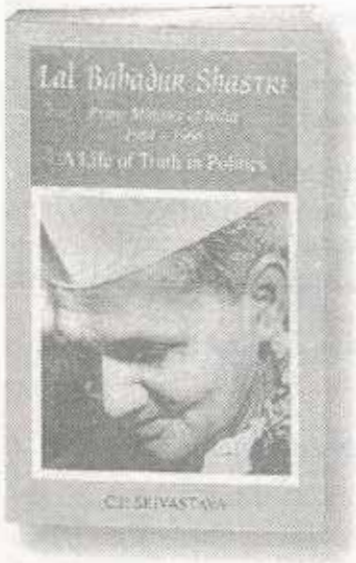

स्वतंत्र भारत के द्वितीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री (१९०४ - १९६६) की जीवन गाथा एक सामान्य व्यक्ती की असामान्य गाथा है। इस व्यक्ति नें अपने प्रारंभिक जीवन में गरीबी की आग की झुलस को झेलते हुए केवल जैविक सिद्धांतो के बल पर असाधारण राजनैतिक उँचाई हासिल की। शास्त्रीजी अपने पीछे ना कोई धन - संपत्ती छोड़ गए, न कोई बँक-बैलेंस। हाँ, हर तरह के भ्रष्टाचार के बोलबाले वाले आज के माहौल में राजनीति का चक्कर चलाने वालों के लिए एक मिसाल जरूर कायम कर गए। क्या आज का राजनेता इनसे कुछ सीखना चाहेगा?

केवल १९ महिने प्रधान मंत्री रहे शास्त्रीजी का कार्यकाल सरगर्मियो से भरा, तेज गतिविधियों का काल था। इस काल के दरम्यान राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय अहमियत के कई सामाजिक तथा राजनैतिक मसलों ने सिर उठाया, जिनमें पाकिस्तान के खिलाफ़ एक बडा युद्ध भी शामिल है।

इन सब घटनाओं का विस्तृत विवरण तो इस पुस्तक में है ही; साथ ही ऐसे कई तथ्यों का अंतर्भाव भी है, जिन्हें पहली बार उजागर करके ठीक ढंग से स्थापित किया गया है।

कई वर्षों तक शास्त्रीजी के निजी सचिव रहे लेखक ताश्कंद में उनकी मृत्यु तक उनके साथ थे। पाँच साल तक की गहरी खोज, तथ्यों की छानबीन, विभिन्न लोगों के साथ साक्षात्कार, दस्तावेजों का अध्ययन - इन सबका नतीजा है यह विस्तृत विद्वत्तापूर्ण चरित्रग्रन्थ। लेखक सर सी.पी. श्रीवास्तवजी ने शास्त्रीजी की ताश्कंद में हुई रहस्यमय मौत के कारणों की सही जांच - पड़ताल की दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात चिकित्सा-विशेषज्ञों के साथ भी सलाह - मशवरा किया।

YUVADRISHTI

yuvadrishti@yahoo.com

Reg. No. _____ -- _____
(FOR YUVADRISHTI USE)

SUBSCRIPTION FORM

(PLEASE FILL IN CAPITALS)

Name (IN BLOCKS) _____

Address _____

_____

City _____ PIN _____

State _____

Email _____ Phone

Cash/DD No. _____ Dt. _____ Drawn on _____

Of Rs. _____

_____
Signature

DD should be sent in the favour of 'Yuvadrishti' payable at Pune.

Address for correspondence :

Yuvadrishti

Plot No. 79, Survey No. 98, Bhusari Colony, Kothrud, Pune - 38, Maharashtra, Phone : 020- 5286105

Dust

I want to be smaller,
Like a dust particle
Which moves with the wind
It goes everywhere,
can go,
Sit on the head of a king
Or can go
And fall at the feet of someone
And it can go
And sit everywhere
But I want to be a particle of dust
That is fragrant,
That is nourishing
That is enlightening

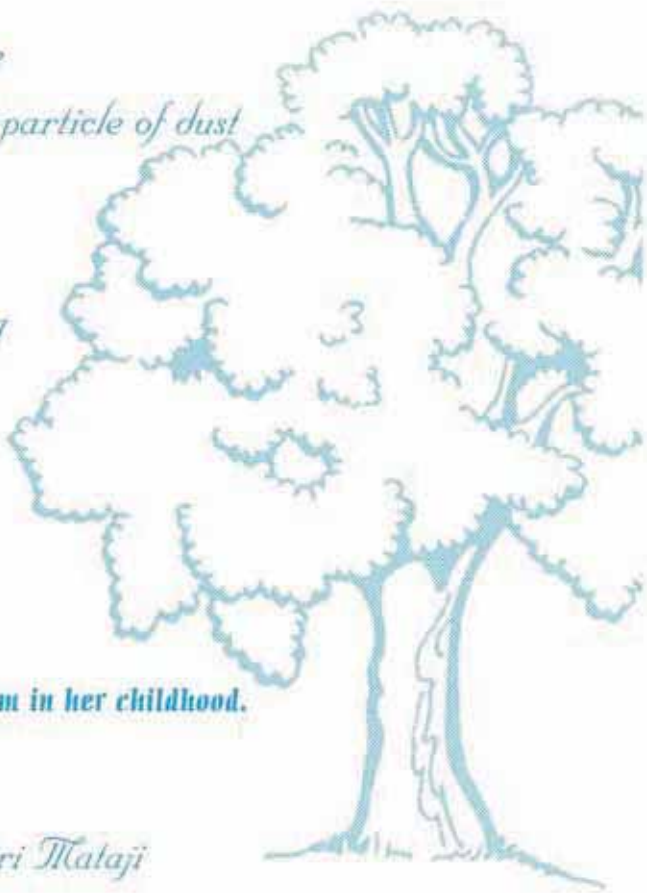

Shri Mataji wrote this poem in her childhood.

Thank you Shri Mataji

I see a mountain from my window
Standing like an ancient sage
Desireless, full of love.
So many trees and so many flowers
They plunder the mountain all the time.

And when the rain pours like
Many pitchers of clouds bursting
And it fills the mountain with greenery.
The storms may come soaring,
Filling the lake with compassion
And the rivers flow running down
Towards the calling sea.
The sun will create clouds and
Wind carries on its feathery wings
The rain on to the mountain.
This is the eternal play
The mountain sees
Without desires.

This is a poetry, Shri Mataji wrote in Cabella watching a mountain.